REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 9 | JUNE - 2019

सरगुजिहा बोली : गुरतुर बोली

कुसुमलता प्रजापति
सहायक प्राध्यापक हिंदी, शासकीय कालिदास स्नातकोत्तर महाविद्यालय
प्रतापपुर जिला सूरजपुर छत्तीसगढ़ .

प्रस्तावना

''हमर इहां के बहुरिया मन नइ जरें
काबर की हमर इहां के लरिका मन
कानवेंट इसकूल में नइ पढ़े''

सरगुजिहा बोली में लिखी, बोली और पढ़ी गई रामप्यारे रसिक जी की ये मार्मिक पंक्तियां एक ओर जहां सरगुजिहा बोली की मधुरिमा समेटे हुए है वहीं दूसरी ओर ''देखन में छोटन लगे, घाव करे गंभीर'' की तर्ज पर तथाकथित आधुनिकता पर प्रहार भी करती है।

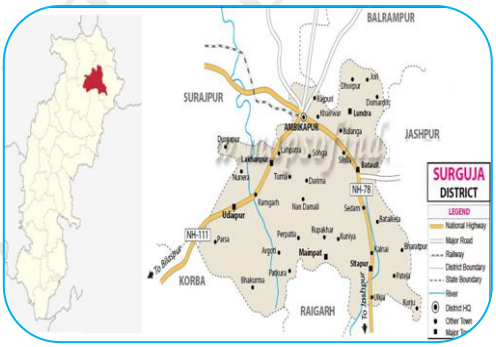

किसी भी प्रदेश की भाषा तथा साहित्य का विकास कई तरह से होता है जिसमें मानव समाज का एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में संचरण, सम्पर्क तथा पारस्परिक व्यवहार घनिष्ठता आदि प्रमुख हैं। भौगोलिक प्रभाव किसी भी बोली को विशिष्ट आंचलिकता प्रदान करते हैं जिसकी कारकता उच्चारण वैविध्य में होती है। उच्चारण वैविध्य से बोलियों का निर्माण होता है जिसके कारण बोलने वालों की सांस्कृतिक छवि प्रकट होती है जो उनकी क्षेत्रीय एकसूत्रता को रेखांकित करती है और जिससे स्वदेशी बंधुत्व की भावना दृढ़ होती है। आंचलिकता में एक स्वतंत्र भावनात्मक अस्तित्व होता तो होता है लेकिन उसकी सांस्कृतिक जड़ें तो जातियों के मूल आधारों से जुड़ी होती है जिसमें एक कारण धार्मिक एकत्व भी होता है। सरगुजिहा बोली भी प्राचीन भारतीय इतिहास और संस्कृति के वटवृक्ष की जड़ों से जुड़ी हुई है। भारत का सांस्कृतिक इतिहास और उसकी सांस्कृतिक एकसूत्रता अत्यंत रहस्यमयी है जिसका प्रमाण स्वयं संस्कृत साहित्य हैं। कोई भी इतिहासकार, समाजशास्त्री या भाषा वैज्ञानिक चाहे कितनी भी अटकलें लगाये और तर्क प्रस्तुत करे कि भारतीय भाषाएं, विभाषाएं संस्कृत भाषा के बीजों से प्रस्फुटित नहीं हुई हैं, अंतत: उसे यह स्वीकार करना ही पड़ता है कि भारतीय भाषाओं, विभाषाओं में अनेक स्वरूप संस्कृत भाषा की मिट्टी से ही बने हैं। सरगुजिहा बोली का एक शब्द 'पंडरा' इस कथन के साक्ष्य के लिए पर्याप्त माना जा सकता है। बोलियों में विभिन्नता आने के अनेक कारण हैं जिन सबका उत्खनन संभव नहीं है। स्मरण रहे कि बोलियों ने स्वयं को संस्कारित कर भाषाओं में प्रकट किया है। निश्चित ही भाषा विकास में स्थानीय बोलियों का सहगामी अस्तित्व विद्यमान होता है। छत्तीसगढ़ी भाषा के अंतर्गत सरगुजिहा बोली ने अपने वैशिष्टय को बचाये रखा है, यह भी उल्लेखनीय है।

सामान्य जन बहुधा इस भ्रांति से ग्रसित हैं कि बोलियों का व्याकरण नहीं होता। वस्तुत: बिना व्याकरण के किसी बोली की कल्पना नहीं की जा सकती है। व्याकरण विहिन वाक्य से वक्ता के भाव का सम्प्रेषण उसी रूप में श्रोता तक नहीं किया जा सकता है। प्रत्येक बोली, बोली—भाषियों

के घर, गांव, बाजार—हाट और रोजमर्रा के कार्य सम्पादन का माध्यम होती है जो सुनिश्चित भाव सम्प्रेषण से ही संभव हो सकता है। भाव सम्प्रेषण के लिए वाक्यों का व्याकरणबद्ध होना परम आवश्यक है। अत: प्रत्येक बोली पूर्व से ही व्याकरणबद्ध होती है। यह अलग बात है कि कुछ बोलियों का व्याकरण सुव्यवस्थित, लिपिबद्ध नहीं हो पाया है।

हिन्दी शब्द हिन्द से आया है जो उत्तर भारत को निर्देशित करता है। यह तीन खण्डों में विभाजित है— राजस्थानी, पूर्वी और पश्चिमी हिन्दी। राजपूताने की जो विभिन्न बोलियां हैं वे राजस्थानी के अंतर्गत हैं जिनका उद्‌भव प्राचीन अवंती भाषा से है। ईसवीं सन् के बाद प्रारंभिक शताब्दियों में दो मुख्य भाषाएं थीं जो प्राकृत कहलाती थीं तथा यमुना और गंगा की घाटियों में बोली जाती थीं। इनमें शौरसेनी पश्चिम में बोली जाती थीं जिसका मुख्यालय उत्तरी दोआब था और मागधी जो पूर्व में बोली जाती थीं जिसका मुख्यालय वर्तमान में पटना शहर के दक्षिण में हुआ करता था। इन दोनों के बीच कुछ विवादित क्षेत्र था जहां पर मिश्रित भाषा बोली जाती थी जो अर्द्ध—मागधी कहलाती थी जो शौरसेनी और मागधी की मिश्र स्वरूपा थी। यह मिश्रित भाषा अर्द्ध—मागधी या वर्तमान पूर्वी हिन्दी की जनक है। इनमें तीन मुख्य बोलियां आती हैं— अवधी, बघेली और छत्तीसगढ़ी जो कुछ प्रांतों के भागों में फैली हुई है। जैसे— उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़। छत्तीसगढ़ी बोली इसी पूर्वी हिन्दी का समुज्ज्वल भाग है और संबंधित है। इसी छत्तीसगढ़ी की उप बोली, मुंहबोली, हमजोली स्वरूपा है सरगुजिहा बोली जिसे हम छत्तीसगढ़ी की उपबोली के नाम से संज्ञापित करते हैं।

सरगुजिहा बोली को समझने के पूर्व सरगुजा जिले का परिचय जान लेना आवश्यक है। सरगुजा जिला भारतीय राज्य छत्तीसगढ़ का एक वृहद् जिला है। जिले का मुख्यालय अम्बिकापुर है। भारत देश के छत्तीसगढ़ राज्य के उत्तर—पूर्व भाग में आदिवासी बहुल जिला सरगुजा स्थित है। इस जिले के उत्तर में उत्तरप्रदेश राज्य की समी है जबकि पूर्व में झारखंड राज्य है। छत्तीसगढ़ का मातृ प्रदेश मध्यप्रदेश भी सरगुजा को उत्तर—पश्चिम भाग में गलबहियां करता है। रायगढ़, कोरबा, कोरिया, जशपुर पड़ोसी जिले के रूप में सीमायें तय करते हैं। इस जिले का अक्षांशीय विस्तार २३० ३७'२५'' से २४० ६'१७'' उत्तरी अक्षांश और देशांतरीय विस्तार ८१० ३७'२५'' से ८४० ४'४०'' पूर्वी देशांतर तक है। यह जिला भौतिक संरचना के रूप में विंध्याचल—बघेलखण्ड और छोटा नागपुर का अभिन्न अंग है। इस जिले की समुद्र तल से ऊंचाई लगभग ६०९ मीटर है। इस जिले की स्थापना ०१.०१.१९४८ को हुई जो ०१.११.१९५६ को मध्यप्रदेश राज्य के निर्माण के तहत् मध्यप्रदेश में शामिल कर दिया गया। उसके बाद २५ मई १९९८ को इस जिले का प्रथम प्रशासनिक विभाजन करके कोरिया जिला निर्मित किया गया। सरगुजा का क्षेत्रफल १६३५९ वर्ग किलोमीटर नापा गया है। ०१.११.२००० को सरगुजा नवगठित राज्य छत्तीसगढ़ का मुकुट बना। सरगुजा के इतिहास से हमें यह पता चलता है कि सरगुजा कई नामों से जाना जाता है वहीं दूसरी ओर दसवीं शताब्दी में इसे डंडोर के नाम से भी अभिहित किया गया है। यह कहना जरा कठिन है कि इस अंचल का नाम सरगुजा कब, कैसे और क्यों पड़ा। वास्तव में सरगुजा किसी एक स्थान विशेष का नाम नहीं है अपितु जिले के समूचे भूखण्ड को ही सरगुजा कहा जाता ळें

''गाजर गूजा, सरगुजा
माटी कर देव, पहाड़ कर पूजा''

प्राचीन मान्यताओं की बात करें तो पूर्व काल में सरगुजा का नामकरण कुछ इस आशय से किया गया था —

- सुरगुजा — सुर + गजा अर्थात् देवताओं एवं हाथियों वाली धरती
- स्वर्गजा — स्वर्ग + जा अर्थात् स्वर्ग के समान प्रदेश
- सुरगुंजा — सुर + गुंजा अर्थात् आदिवासियों के लोकगीतों का मधुर गुंजन

वर्तमान में इस जिले को सरगुजा के नाम से ही जाना जाता है जिसका अंग्रेजी भाषा में लेखन आज भी SURGUJA ही हो रहा है। सरगुजा एक वृहद् जिला है। सरगुजिहा बोली प्रारंभ से ही अपनी अलग पहचान, इतिहास, सांस्कृतिक और भूगोल रखती है। सरगुजा की मीठी बोली सरगुजा की आत्मा है, यह सरगुजा के विशाल जनमानस की शाश्वत् अभिव्यक्ति और भाषिक अस्मिता के साथ साथ सांस्कृतिक धरोहर भी है। ताजा हालात में इस जिले का जनसमुद्र लगभग उन्नीस लाख का है जिसमें अधिसंख्य लोग सरगुजा विभाषा को व्यवहृत करते है। पूर्व में सीतापुर, गुतुरमा, मैनपाट की तराई से लेकर उत्तर–पूर्वी रामानुजगंज, बोहला, डीपाडीह, जशपुर का सीमावर्ती पाट इलाके तक, पश्चिम के चांगभखार रियासतकालीन गांव केल्हारी, जनकपुर, भरतपुर से दक्षिण–पश्चिम कोरबी, सिरमिना, रतनपुर तक, उत्तर दिशा में उत्तरप्रदेश प्रांत को स्पर्श करता बसंतपुर, बलंगी, चांदनी– बिहारपुर से लेकर उत्तर–पश्चिम के मातृ प्रदेश मध्यप्रदेश से गले मिलता वृहद् सोनहत–रामगढ़ कटगोड़ी तक और दक्षिण में बकिरमा, तारा से लेकर दक्षिण–पूर्व में रामगढ़–बिसुनपुर, महेशपुर तक का लगभग दो सौ किलोमीटर की परिधि को घेर यह क्षेत्र और बोली अपने आप में वृहद् और असीमित है। ऐसे विशाल परिक्षेत्र और विभाषा पर चिन्तन, मंथन न हो ता यह चिंताजनक स्थिति हो सकती है। इतिहास, संस्कृति और पुरातत्व का समूचा आकार ही भाषा और बोली के आधार पर अवलंबित होता है। वैसे भी यह विदित ही है कि शब्दकोष और व्याकरण भाषा–बोली की दो आंखें मानी जाती हैं। वृहद् होने के संकेत निम्नानुसार तथ्यों के कारण सुस्पष्ट हो जाता है –

तहसीलों की संख्या	–	१९
विकासखण्डों/जनपद की संख्या	–	१९
पटवारी हल्का	–	२९६
ग्राम पंचायतों की संख्या	–	९७७
राजस्व ग्रामों की संख्या	–	१७७२
राजस्व वृत्तों की संख्या	–	२७
पुलिस जिला	–	३
शैक्षणिक जिला	–	३
एकीकृत आदिवासी विकास परियोजनाएं	–	३
विधानसभा क्षेत्रों की संख्या	–	८
अभ्यारण्यों की संख्या	–	२
कुल जनसंख्या	–	१९७२०९४

इस प्रकार उपरोक्त आंकड़े सरगुजिहा बोली के विस्तार को भी प्रदर्शित करते हैं। निस्संदेह सरगुजिहा बोलने वाली की संख्या जनसंख्या प्रसार के साथ–साथ बढ़ी ही है। रायपुर और बिलासपुर जिलों में विशुद्ध कही जाने वाली छत्तीसगढ़ी बोली जाती है। बिलासपुर के उपर बढ़ने पर इसमें सीमावर्तिनी अन्य बोलियों का प्रभाव पड़ने लगता है। सरगुजिहा छत्तीसगढ़ की एक ऐसी बोली है जो कोरिया, सरगुजा और उदयपुर क्षेत्रों में बोली जाती है। छोटा नागपुर के समीप होने के कारण इस पर नगपुरिहा का प्रभाव भी पड़ा है जो भोजपुरी का ही एक रूप है और जिसे छत्तीसगढ़ी की उपबोली भी समझा जाता है। सरगुजा की प्रमुख बोली होने के कारण इसे सरगुजिहा कहा जाता है। व्याकरण किसी भी भाषा–विभाषा की चौखट–फ्रेम होता है जैसे घर को सुरक्षित रखने के लिए दरवाजों की जरूरत होती है और दरवाजे चौखट पर ही मंडित होते हैं उसी प्रकार भाषा के विकास और प्रसार के लिए चौखट पहले आवश्यक है और वह व्याकरण ही हो सकता है। हालांकि सरगुजिहा व्याकरण पर अभी ठोस कार्य प्रतीक्षाधीन ही है। नये सरगुजा विश्वविद्यालय की सीापना होने से इस दिशा में सार्थक पहल होने की उम्मीद तो की ही जा सकती है। कुडुख बोली पर आधारित शब्दकोष का निर्माण जिस प्रकार अम्बिकापुर के पूर्व तहसीलदार श्री नीलम टोप्पो ने किया है उसी प्रकार अपेक्षित है कि सरगुजिहा शब्दकोष पर ठोस

कार्य होना चाहिए। हम पगडंडी बनायेंगे तभी तो अच्छी सड़क बनेगी और आगे चलकर इसी प्रयास को एक्सप्रेस हाइवे में हमारी आने वाली पीढ़ी बदलेगी। सरगुजिहा जैसी गुरतुर बोली को और अधिक आदर और स्नेह देने की आवश्यकता है। सरगुजिहा बोली को उत्तरी छत्तीसगढ़ी बोली भी कहा जाता है। इस बोली पर भोजपुरी, अवधी, बघेली का भी प्रभाव है। इस बोली की सारगर्भित विशेषताओं को इस प्रकार रेखांकित किया जा सकता है —

उच्चारण — सरगुजिहा के उच्चारण की कुछ विशेष प्रवृत्तियां हैं। नगपुरिहा के समान इसमें भी अंतिम एवं बलाघातहीन ह्स्व इ का उच्चारण पूर्ववर्ती अक्षर के बाद किया जाता है। यथा — 'बांटि' के स्थान पर 'बांइट', 'कूदि' के स्थान पर 'कूइद', 'करि' के स्थान पर 'कइर', 'मनिसे' के स्थान पर 'मइनसे' आदि। त् और ह् के संकोच की प्रवृत्ति भी सरगुजिहा में है। यथा—

राखत हें, राखथें अर्थात् रखते हैं।
कहत हें, कथें अर्थात् कहता है।

एक प्रचलन यह भी देखने में आता है कि 'ऋ' को 'रू' से उच्चरित करते हैं जैसे उरिन और 'श' को 'स' और 'ख' से उच्चरित करते हैं तथा त्र, त्तर में बदल जाता है। ज्ञ, गिय बन जाता है। यथा —

शीत	=	सीत
देश	=	देस
खुशी	=	खुसी
भाषा	=	भासा, भाखा
दोष	=	दोस, दोष
वर्षा	=	बरखा, बरसा
विष	=	बिख, बिस
शेषनाग	=	सेसनाग
विशेष	=	बिसेस
आषाढ़	=	असाढ़
मंत्र	=	मंतर
चरित्र	=	चरित्तर
नक्षत्र	=	नक्षत्तर
राक्षस	=	राच्छस, राकस, रक्सा
ज्ञान	=	गियान
यज्ञ	=	जग्ग

ह्स्व स्वर का दीर्घ स्वर में बदलाव और अक्षरों में परिवर्तन भी कम रोचक नहीं है यथा —

अक्षर	=	आखर
जप	=	जाप
नव	=	नावा
ईट	=	ईटा
पत्थर	=	पथरा
तीर्थ	=	तीरथ
पूंछ	=	पूंछी

हुक्म	=	हुकुम
आकाश	=	अकास
आनंद	=	अनंद
काका	=	कका
मामा	=	ममा
पलाश	=	परसा
इमली	=	अमली
किस्सा	=	कीसा
जैसे	=	जैसन
तैसे	=	तैसन
कंधा	=	खांध
कागज	=	कागद
नीम	=	लीम
मयूर	=	मजूर
यादव	=	जादो
यात्रा	=	जातरा
प्रलय	=	परले
समय	=	समे
संशय	=	संसो
कपाल	=	कपार
बबूल	=	बमूंर
स्वभाव	=	सुभाव
त्हसील	=	तसील
रूमाल	=	उरमाल
भालू	=	भलुवा

संज्ञा — सरगुजिहा के परवर्गों के प्रयोग में भी भिन्नता पाई जाती है। कर्म एवं संप्रदान के कारक चिन्ह 'का' य ला के स्थान पर कर के प्रयोग होता है। यथा — मइनसे = मनुष्य का, मुलुक कर = देश का। अधिकरण में मां के अनुनासिक रूप का प्रयोग न होकर मां का व्यवहार होता है। कारण और अधिकरण दोनों में कभी—कभी ला और मां के स्थान पर 'ए' का योग कर दिया जाता है। यथा —

भूखे भूख से
घर घर में
पिठे पिठ में

लिए के अर्थ में खातिर या लागिन का प्रयोग किया जाता है। यथा —

ए खातिर = उसके लिए

कतिपय विशिष्ट संज्ञा शब्दों का प्रयोग भी सरगुजिहा में दृष्टव्य है। यथा—

माल जाल	=	माल टाल
दाउ	=	बाप

LBP PUBLICATION

बुसा	=	भूसा
घंगरा	=	नौकर
सुआर	=	मालिक
ढेंटू	=	गर्दन (गला)
बेसलुगा	=	कपड़ा—लत्ता
निसाफ	=	इंसाफ
ताने	=	दूर
घानि	=	लक्षण
बरदा	=	बैल
खपकन	=	दलदल
डौकी	=	स्त्री
दसना	=	बिछौना
बासी	=	भोजन
पिसान	=	आटा
मेंछा	=	मूंछ
डीह	=	टीला
टूरा	=	लड़का
सुवना	=	सुआ
नोनी	=	लड़की
मूड़	=	संख्या, नग, तादाद

सर्वनाम — सर्वनामों का प्रयोग इस प्रकार सरगुजिहा में दृष्टव्य है। यथा —

आपन	=	अपना
मोला	=	मुझे
एकर	=	इसका
हामे	=	हम
जो	=	हो
ओमन	=	उनके
ओहेच	=	उसी के
ओमन मधे	=	उनमें या उनके माध्यम में
जिसन	=	जिस
तिसन	=	तिस
तंही	=	आप, तुम
मंहूं	=	मैं भी
तंहूं	=	तुम भी

विशेषण — विशेषण का प्रयोग इस प्रकार सरगुजिहा में दृष्टव्य है। यथा —

एक	=	झिन
ठिन	=	अदद
ढेर	=	बहुत
सगरी	=	सबके लिए

तियर	=	तरह
लाम, लम्मा	=	लम्बा
थोरीचकर	=	थोड़ा
सोझ	=	सीधा
ढीलंग	=	ढीला
पोठ	=	ठोस
टांठ	=	कड़ा
हरू	=	हल्का
गरू	=	भारी
अम्मट	=	खट्टा
करू	=	कड़वा
चुरपुर	=	चटपटा
सुघ्घर	=	सुन्दर
ओदा	=	गीला
फोर के कहना	=	खुलकर कहना

क्रिया — क्रिया का प्रयोग इस प्रकार सरगुजिहा में दृष्टव्य है। यथा —

होथे	=	होता है
में रहिस	=	हुआ था
आहै	=	है
आहौं	=	हूं
नखौ	=	नहीं हूं
आहे	=	वह है
होयेल	=	होता है
घुंचना	=	पीछे हटना
मड़ाना	=	रखना
नी	=	नहीं

यहां उल्लेखनीय है कि कारक और अपादान कारक में 'ले' या 'से' का उपयोग बाद में करते हैं पर अर्थ नहीं बदलता है। कुछ दशक पहले 'से' का उपयोग लगभग ज्ञात नहीं था और आज भी पुराने लोग 'से' का उपयोग नहीं करते वरन वे अक्सर 'ले' का उपयोग ही करते है। वर्तमान पीढ़ी में 'से' की ओर झुकाव है जो विद्यालयों में हिन्दी शिक्षण के कारण आया है।

अव्यय — अव्यय का प्रयोग इस प्रकार सरगुजिहा में दृष्टव्य है। यथा —

आव	=	अब
तिहां	=	वहां
तहने	=	तहां
इसन	=	ऐसा
काहे कि	=	क्योंकि
होले	=	यदि
ए नियर	=	इस तरह
का नियर	=	किस तरह

उपसर्ग — उपसर्ग का प्रयोग इस प्रकार सरगुजिहा में दृष्टव्य है। यथा —

अ	—	अबेर
अन	—	अनचिन्हार
उ	—	उरिन
औ	—	औगुन
कु	—	कुलच्छन
दर	—	दरपका
भर	—	भरपेट
अनजतिया	—	अन्य जाति का
पनपाना	—	बढ़ाना
उपकाना	—	उखाड़ना
अधरतिया	—	आधी रात
आनगांव	—	अन्य गांव
कचपचाना	—	खुजलाना
चरचरहा	—	कर्कश स्वर वाला

प्रत्यय — प्रत्यय का प्रयोग इस प्रकार सरगुजिहा में दृष्टव्य है। यथा —

कारिन	—	नचकारिन
हारिन	—	पनिहारिन
दार	—	जिमिदार
बर	—	लइकाबर
हार	—	पनिहार
वार	—	रखवार
अंता	—	पढ़ंता
इया	—	रेंगइया
इहा	—	गंवइहा
इस	—	पढ़िस
ही	—	चघही (चढ़ेगा)
वारी	—	संगवारी
अइया	—	बइठइया
अउती	—	पुरखौती
इन	—	चंडालिन
ई	—	अंजोरी
उन	—	नानकुन
हा	—	कलकलहा (कलहप्रिय)
जियां	—	घरजियां (घरजमाई)
यां	—	घरगोसइयां
इया	—	चरगोड़िया
हा	—	दतनिपोरहा
वा	—	भोकवा
हा	—	मुचमुचहा
रू	—	बछरू
इन	—	नतनिन

LBP PUBLICATION

दार	—	फरदार
बाज	—	धोखाबाज

संबोधनवाची एवं क्षेत्रीय शब्दों के भावार्थ — संबोधनवाची एवं क्षेत्रीय शब्दों का प्रयोग इस प्रकार सरगुजिहा में दृष्टव्य है। यथा —

गा	—	पुरूषों के लिए
गे	—	महिलाओं के लिए
हो, जी	—	सभी के लिए
भांटो	—	जीजा के लिए
जंवर	—	जोड़ी, पति—पत्नि के लिए
पठरू	—	बकरी का बच्चा के लिए
पठिया	—	बकरी की बच्ची के लिए
जंवरिया	—	हमउम्र के लिए
चिरई	—	पक्षी के लिए
रांड़ी	—	विधवा के लिए
नोनी	—	पुत्री के लिए
बाबू	—	पुत्र के लिए
बिलयती	—	टमाटर के लिए
गोंदली	—	प्याज के लिए
निचट	—	बिल्कुल, निपट
भइंगा	—	भैंस के लिए
कूरो	—	नाम के लिए एक प्रकार का पैमाना
पसंद	—	अच्छा लगना
रोट	—	बड़ा
नान	—	छोटा
रइंदा	—	दह, पानी का गहरा गड्ढानुमा जलभराव क्षेत्र
पर्सों	—	परसों
नर्सों	—	परसों के बाद का दिन
अबेरहा	—	देर से
लकठा	—	करीब
अभीचे	—	इसी वक्त
अतकेच	—	इतना
तरी	—	नीचे

यह भी स्पष्ट है कि जब आदरसूचक शब्द का उपयोग संबोधन में किया जाता है तो 'ग' 'अगा' 'गे' बदलकर 'हा', 'अहा', 'जी', 'तुंहर' हो जाता है। यथा —

चल जी भांटो रामायन गाबो।
तुंहर गांव ले रेण नदी हर कतेक दुरिहां हवे।

'रे' और 'अरे' स्नेहसूचक शब्द है —

कहां जात हस रे बाबू
कहां ले आवत हस रे नोनी

कई बार 'रे' विस्मय बोधक अभिव्यक्ति अनादर सूचक भी बन जाता है —

कइसन गोठियात हस रे टूरा।

कहावत और मुहावरे — भाषा विज्ञान सिद्धांत के अनुसार प्रयत्न लाघव से अल्प लाघव के प्रयोग से यदि अभिव्यंजना शक्ति में वृद्धि हो तो किसी भाषा अथवा बोली में निखार आ जाता है। सरगुजिहा बोली के मुहावरे और कहावतें इस आवश्यकता को पूर्ण करते हैं। सरगुजिहा बोली के मुहावरे और कहावतों में गांभीर्य और व्यंग्यात्मक अर्थव्यंजना का सौंदर्य अद्‌भूत रूप से विद्यमान है। गूढ़ दार्शनिक अभिव्यक्ति और जीवन की व्यथित संवेदना के साथ ही एक उपहासपरक अर्थ ध्वनित होता है। सरगुजा में मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रचलन इतना है कि ग्रामीणजन आम बोलचाल में भी इसका बखूबी प्रयोग करते हैं। कुछ रोचक उदाहरण दृष्टव्य है —

अपटे बन के पथरा
फोरे घर के सील

———————————————

लंगड़ा—खोरवा महा उपाई
छान्ही में चघ के बेंदरा नचाई

———————————————

डउकी बुद्धि करे ओझाई
जनता खुंटी आंखी गंवाई

———————————————

कोरी मा लइका
गांव भर ढिंढोरा

———————————————

ओस चाटे ले पियास नइ बुझे

———————————————

घर में भूरी भांग नहीं
बिना घीव के लल्लू खात नहीं

———————————————

धूर मा सूते अउ सरग के सपना

———————————————

होती के धोती
जाती के लंगोटी

———————————————

देही में न लत्ता
जाये बर कलकत्ता

———————————————

जेकर जइसन घर दुआर,
वोकर वइसने फरिका
जेकर जइसन दाई दाउ,

वोकर वइसने लरिका

पर्यायवाची शब्द —

शब्द विशेष द्वारा अभिव्यंजित भावों, गुणों, रूपों एवं क्रियाओं के लिए प्रयुक्त होने वाले सामानार्थक शब्दों को पर्यायवाची या प्रतिशब्द करते हैं। पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग आवश्यकता, सुविधा एवं प्रसंगानुसार किया जाता है। इससे भाषा की सरसता, मधुरता एवं लालित्य में वृद्धि हो जाती है। कुछ पर्यायवाची शब्दों में अर्थ या भाव की दृष्टि से सुक्ष्म अंतर भी होता है जिसके कारण एक ही शब्द का प्रयाग हर स्थिति में सभी सीानों पर अच्छा नहीं लगता। जैसे — डबरा, खोचका, चिखला आदि। ये सभी गड्ढे के पर्याय हैं किन्तु आकार—प्रकार में अंतर होता है। इन शब्दों में अर्थभेद न्यून और समानता होने के कारण समानता को प्रधानता देते हुए पर्यायवाची शब्दों के रूप में प्रयोग किया जाता है। सरगुजिहा बोली भाषा में भी प्रतिशब्दों की भरमार है और इनका वाक्य विशेष में महत्वपूर्ण स्थान सुरक्षित है। कुछ उदाहरण इस प्रकार चिन्हित किये जा सकते हैं —

अबिरथा / बेकार	—	फोकट, फालतू, अकारथ
अलाल / आलसी	—	कंझटिया, कोढ़िया, लिज्झड़
ईरसा / ईर्ष्या	—	खंइट, खार, इरखा
गोसइयां / पति	—	घरवाला, मनसे, मरद
झंझट / विवाद	—	लफड़ा, पिचकाट, पचरा
झोलंगा	—	ढिलंग—ढालंग, झोलगा, ढुलढुल
टेड़गा	—	तिरपटहा, तिरछा
डरडरावन	—	उरडरहा, डरभूतहा, भयावन
नोनी	—	टूरी, कइना
पखना	—	पथरा, पथना
मयारू	—	दुलरूवा, मनबोधना, मोहना
मितान	—	संगवारी, गियां, मितवा, संगी, सांथी
सुघ्घर / सुंदर	—	चुकचुक ले, ठउका, नींक, बने

युग्म शब्द — संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण शब्दों के साथ युग्म के रूप में व्यवहृत होने वाले शब्दों का युग्म शब्द कहते हैं। युग्म का अर्थ होता है— जोड़ा। अत: इसका प्रयोग एक साथ किया जाता है। व्यवहार में ऐसे अनेक युग्म शब्द प्रयोग में आते हैं जिनकी वर्तनी में अंतर होता है और अर्थ में भी। सरगुजिहा में ऐसे युग्म शब्दों की संख्या अधिक तथा बहुप्रचलित है। यथा —

रूख—राई	(वृक्ष)
नान—कुन	(छोटा)
नदिया—नरवा	(नदी—नाला)
मुंड़—गोड़	(सिर—पैर)
दुब्बर—पातर	(दुबला—पतला)
उवत—बुड़त	(उगते—डूबते)
धान—पान	(धान—पानी)
नंगर—बइला	(हल—बैल)
डांड़—डांड़ी	(अर्थदंड, मैदान—लंबी लकड़ी)

इस प्रकार तथ्यों और वाक्यांशों के आलोक में हम देखते है तो पाते हैं कि सरगुजिहा बोली भी अन्य बोली और भाषा की तरह ही धार्मिक, पारंपरिक, राजनीतिक तथा व्यापारिक सूत्रों से गठबंधित रही है। वैज्ञानिक क्रांति से उद्‌भुत विपुल यांत्रिक उत्पादन की व्यापक खपत के लिए किये जा रहे वाणिज्यिक प्रयत्नों में सरगुजिहा विलुप्त न हो जाये इस बात की चिन्ता करने का अब सही वक्त आ गया है। सामाजिक और साम्प्रादायिक समरसता की निर्झरणी अजस्त्र बनी रहे इसके लिए आवश्यक है कि सरगुजिहा मनसे मन को सरगुजिहा बोली की मिठास को और बढ़ाना होगा। शासन पक्ष से तो अपेक्षा रहेगी ही साथ ही यह एक विनम्र निवेदन नवोदित सरगुजा विश्वविद्यालय से भी कि अंचल की गुरतुर बोली की संरक्ष के लिए सार्थक पलन करें। जनबोली भाषा रूप में प्राप्त सरगुजिहा को बढ़ावा देकर अंतत: हम मुख्य बोली छत्तीसगढ़ी और में हिन्दी भाषा को ही प्रत्यक्ष—परोक्ष रूप में पुष्ट कर पायेंगे। शासकीय महाविद्यालय सूरजपुर के हिन्दी विभागाध्यक्ष आदरणीय प्रोफेसर श्री अशोक जी शर्मा के प्रति अत्यंत आभार व्यक्त है कि जिनके चिन्तन और निर्देशन में निर्मित सरगुजिहा बोली की क्षेत्रीय मिठास इस लघु आलेख के द्वारा प्रकट हुई, सोच का दायरा विस्तृत हुआ। अनुसंधान की दिशा आंचलिक बोल—चाल पर भी केन्द्रित हो तो निश्चित तौर पर यह क्षेत्र और अधिक गौरवान्वित होगा और आने वाली पीढ़ी को हम सम्प्रेषण का एक नया प्रकाश—स्तम्भ सौंप सकते हैं।

''निज भाषा उन्नति अहे सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय के सूल''

LBP PUBLICATION